अपने कर्मों के लिए स्वयं उत्तरदायी है। श्रीभगवान् तो केवल बहिरंगा शक्ति (अपरा प्रकृति) के माध्यम से उसे पर्याप्त सुविधा प्रदान करते हैं। इस कर्म सिद्धान्त की सम्पूर्ण गूढ़ता को जानने वाला कर्मफल से लिपायमान नहीं होता। भाव यह है कि श्रीभगवान् के इस दिव्य स्वरूप को तत्त्व से जानने वाला कृष्णभावना का अनुभवी पुरुष कर्मबन्धन के आधीन कभी नहीं रहता। जो श्रीभगवान् के अलौकिक स्वरूप को न जानते हुए यह समझता है कि साधारण जीवों के समान भगवान् के कर्म भी सकाम हैं, वह निश्चित रूप से कर्मफल से बँध जाता है। दूसरी ओर, जो परमसत्य के तत्त्व को जानता है, वह पुरुष कृष्णभावना में स्थित जीवन्मुक्त है।

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः।
कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम्।।१५।।

एवम्=यह तत्त्व; **ज्ञात्वा**=भलीभाँति जानकर; **कृतम्**=किया गया है; **कर्म**=कर्म; **पूर्वैः**=पूर्व के; **अपि**=भी; **मुमुक्षुभिः**=मुमुक्षु पुरुषों द्वारा; **कुरु**=कर; **कर्म**=स्वधर्म रूप कर्तव्य; **एव**=ही; **तस्मात्**=अतएव; **त्वम्**=तू ; **पूर्वैः**=पूर्वजों द्वारा; **पूर्वतरम्**=प्राचीन काल से; **कृतम्**=किया हुआ।

अनुवाद

प्रचीन काल के सब मुमुक्षु पुरुषों ने इसी ज्ञान के साथ कर्म करके मुक्ति-लाभ किया है। अतएव पूर्वजों की भाँति इस बुद्धियोग से युक्त होकर तू भी कर्तव्य का आचरण कर।।१५।।

तात्पर्य

मनुष्यों की दो कोटियाँ हैं। कुछ का हृदय पूर्णतया विषय-कलुषित है, तो दूसरे विषयैषणा से मुक्त हैं। कृष्णभावनामृत इन दोनों प्रकार के मनुष्यों के लिए समान रूप से कल्याणकारी है। पूर्णतया विषय-दूषित व्यक्ति विधिभक्ति के आचरण द्वारा शनैः-शनैः हृदय का परिशोधन करने के लिए कृष्णभावनामृत को ग्रहण करें। पहले से विशुद्ध पुरुषों को भी कृष्णभावनाभावित क्रियाओं में ही तत्पर रहना चाहिए, जिससे उनकी आर्दश क्रियाओं का अनुकरण करके दूसरे भी कल्याण को प्राप्त हो सकें। देखा गया है कि प्रायः मूर्ख व्यक्ति अथवा कनिष्ठ साधक कृष्णभावनामृत को जाने बिना ही कर्म से विरक्त हो जाना चाहते हैं। रणांगण में कर्म से विरत हो जाने की अर्जुन की इच्छा को श्रीभगवान् ने स्वीकार नहीं किया। कल्याण के लिए कर्म करने की यथार्थ विधि को जानने की आवश्यकता है। कृष्णभावनाभावित कर्म को त्यागकर अलग बैठकर कृष्णभावनामृत का दम्भ करने की अपेक्षा श्रीकृष्ण की प्रसन्नता के लिए कर्मक्षेत्र में तत्पर रहना कहीं उत्तम है। इस श्लोक में अर्जुन को यह परामर्श दिया गया है कि वह सूर्यदेव आदि पूर्ववर्ती भगवद्भक्तों के चरणचिन्हों का अनुसरण करते हुए कृष्णभावनाभावित कर्म करे। भगवान् श्रीकृष्ण को उन सब कर्मों की स्मृति है जो उन्होंने और उनके भक्तों (कृष्णभावनाभावित पुरुषों) ने पूर्व में किये श[illegible] लिए वे